Law and Gospel

व्यवस्था और सुसमाचार

व्यवस्था और सुसमाचार

लूथरन होने के नाते हम परमेश्वर का वचन को सही समझते है और सही उपयोग भी करते है।

"अपने आपको परमेश्वर के ग्रहणयोग्य ऐसा कार्य करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर जिस से लज्जित होना न पड़े, और जो सत्य के वचन को ठीक ठीक काम में लाए।"

– 2 तीमुथियुस 2 : 15

परमेश्वर का वचन को सही तरीका से समझाने के लिए बाइबल का मुख्य दोप्रकार कि शिक्षाओं का ध्यान देना उचित है, वे है (i) व्यवस्था और (ii) सुसमाचार, हम यह दो शिक्षाओं का कब, कैसे और क्यों उपयोग करते है; उसके बारे में लोगों को सिखाना चाहिए।

वचन के अनुसार अर्थ और अन्तर

इस दोनों मुख्य बाइबल शिक्षाओं का अन्तर दर्शाया गया है। व्यवस्था हमें आज्ञादेता है और हमारे कर्त्तव्य को दिखाता है जो हम करना चाहिए। परन्तु सुसमाचार हमें यह बताती है कि परमेश्वर का आज्ञाओं का पालन करने के लिए सामर्थ कहाँ से आता है।

व्यवस्था हमारे पापों को तथा उसका दण्ड को हमें दिखाता है। परन्तु सुसमाचार केवल माफ करने वाला परमेश्वर का प्रेम और हमें साफ और शुद्ध करनेवाला अनुग्रह का प्रगट करता है। व्यवस्था मनुष्य का (आदम का) आज्ञा उल्लंघन का पाप और उसका दण्ड को दिश्वाता है; परन्तु सुसमाचार हमारे प्रभू यीशु मसीह का मनु संप्रदायका पापों का क्षमा का दिखाता है।

सुसमाचार संसार का उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के बारे में जो हमारे और सारे संसार के पापों के लिए मनुष्य रूप में आया जीया और क्रूश पर चढ़ाया

जाकर मारा गया, वह एक शिध मनुष्य के रूप में जीया। जो किसि मनुष्य के द्वारा जीया जा नहीं सकता; उसने हमारे तथा सारे संसार के पापों के लिए अपने आप को बलिदान किया और तीसरा दिन मृत्यु पर जयवन्त हो कर जी उठा इस लिए जो कोई उसपर विश्वास करता है वह अनन्त जीवन का अधिकारी वन जाता है। यह विषय सुसमाचार हमें बताता है। परन्तु व्यवस्था हमें हमेशा अपने पापों को हमें दिखाता है; परमेश्वर का ईछा हमारे जीवनों में पूरा होना अवश्य है; लेकिन हम इसे पूरा नहीं कर सकते है। हमारे परमेश्वर पवित्र और धर्मि परमेश्वर है; वह पूराना नियम तथा नया नियम में भी यह कहता कि हम उसका जैसे बने। यह मनुष के द्वारा असम्भव है।

"अतः तुम सिद्ध बनो, जैसा कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।"

– मत्ती 5 : 48

और

"इस्राएलियों की सारी मण्डली से बात कर और कह : तुम पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ।"

– लैव्यव्यवस्था 19 : 2

परन्तु हमारे उद्धार कर्त्ता प्रभु यीशु मसीह परमेश्वरका सिद्ध मेम्ना है जो सारे संसार का पापों को उठा ले जाता है। जैसे बप्तिस्मा देनेवाला यूहन्ना ने कहा था।

यदि आप लोगों से पूछेंगे कि वे कैसे उद्धार पाए तब वहत सासे लोग यह कहेगें कि वे दश आज्ञाओं का पालन के द्वारा उद्धार पाए। परन्तु यह बात सच्च नहीं है। छुटकारा भले कामों से नहीं, या आज्ञा पालन के द्वारा नहीं परन्तु केवल उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा पाया जा सकता है।

उद्धेश्यः

व्यवस्था और सुसमाचार का उद्धेश्य सरल और साफ होना चाहिए। परमेश्वर का वचन का ठिक रूप से उपयोग करके इस दो मुख्य शिद्धान्तों का समझया

जाना चाहिए। सुसमाचार हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर का सामर्थ है। रोमियो 1 : 16 और यूहन्ना 3 : 16 के अनुसार। बाइबल में अनेक वचन हमें बताती है कि हमारे उद्धार सियोन पर्वत में नहीं परन्तु कलवरी पर्वत पर है।

बाइबल के अनुसार व्यवस्था के द्वारा उद्धार का पाना सम्भव नहीं है। जैसे व्यवस्था बताता है कि वह प्राणी जो पाप करे वह निश्चय मरेगा। यहजकेल18:4

"क्योंकि जो कोई सम्पूर्ण व्यवस्था का पालन करता हो और फिर भी किसी एक बात में चूक जाए तो वह सारी व्यवस्था का दोषी ठहरता है।"

– याकूब 2 : 10

"परन्तु जो लोग व्यवस्था के कामों पर निर्भर हैं, वे शाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, "जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी सभी बातों का पालन नहीं करता, वह शापित है।"

– गलातियों 3 : 10

व्यवस्था का मुख्य उद्धेश्य यह है कि एक दर्पण कि जैसा हमारा गिरा हुआ अवस्था को हमें दिखाना है।

"क्योंकि उसकी दृष्टि में कोई प्राणी व्यवस्था के कार्यों से धर्मी नहीं ठहरेगा; क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप का बोध होता है।"

– रोमियों 3 : 20

व्यवस्था एक मार्ग दर्शक कि जैसा भी काम करता कि मसीही लोग परमेश्वरका वचन से परमेश्वर का इच्छा को अपने जीवन में मालुम कर सके भजन संगिता 119 : 105 के अनुसार।

सामर्थः

बचाने का सामर्थ सुसमा चार में ही है, परन्तु व्यवस्था में नहीं जैसे हमने रोमियों की 1 : 16 यूहन्ना 3 : 16 में तथा अन्य वचनों में देखा। पाष्टर कर्थ

एक उदाहरण देते है जेसा "एक व्यक्ति ने अपनी बेटा से एक काम दे कर कहा यह काम खतम करना जब तक आज रात में आऊँगा, नहीं तो में तुझे दण्ड दूँगा। परन्तु यह बेटा का उस काम करने के लिए सामर्थ नहीं था। वह कोशिश तो किया परन्तु नहीं कर सका। ठिक समय पर उसका बड़ा भाई आकर उसे कहाँ, "तुम हट जाओ; में तुम्हारे लिए ये काम करता हूँ। उसने अपने छोटा भाई के लिए उस काम को कर दिया। जब पिता घर आएगें क्या वह अपनी बेटा को दण्ड देंगे? जी नहीं, कारण पिता का आज्ञा का पालना किया जा चुका है चाहें दूसरा व्यक्ति के द्वारा भी क्यूँ न हो। ठिक उसि तराह हमारे स्वर्गीय पिता परमेश्वर हमें अनेक आज्ञाओं को अपने वचन से देकर कहता है कि हम उनका आज्ञाओं का पालन करें नहीं तो वह आकर हमें दण्ड देंगे, हम ने चेष्टा तो कि लेकिन हम से नहीं हुआ, परन्तु हमारा बड़ा भाई यीशु जी आकर हमसे कहा "हाटों; में तुमहारे लिए यह काम करता हूँ। और वह हमारे ओर से उसे काम कर भी दिए। क्या पिता परमेश्वर हमें सज्जा देंगे? जी नहीं, कारण आज्ञा का पालन किया गया हमारे ओर से हमारे बड़ा भाई प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जो हमारा उद्धारकर्ता है। इस लिए हम मसीह के द्वारा उधारपाए है जो हमारे लिए आज्ञाओं का पालन किया। उनका धार्मिकता एक सफेद बहूमूल्य अलंकार के तुल्य हमारे ऊपर डाला गया।

लक्ष्यः

मसीह जीवन का लक्ष्य सुसमाचार से तथा सुसमाचार के साथ होता है। **"क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश करता है जिस से यह निष्कर्ष निकलता है कि जब एक सब के लिए मरा, तो सब मर गए।"**

– 2 कुरिन्थियों 5 : 14

हम पुरस्कार पाने के लिए भले काम नहीं करते, परन्तु हम इस लिए भले और अच्छे काम करते है कि मसीह ने हमारे लिए मरे और वह आठो को स्वर्ग जाकर हमारे लिए जगह तैयार किया कि वह जहाँ रहे हम भी वहाँ रहे। वह हमारे दण्ड सह लिया है।

"क्योंकि तेरे पांच पति हो चुके हैं, और अब जो तेरे पास है वह भी तेरा पति नहीं है। यह तू ने सच ही कहा है।"

– यूहन्ना 4 : 18

फलः

लूका 2 : 10-20 में हम देखते है कि सुसमाचार का आज्ञाकारी बनने का फल आनन्त और खुशी है. लूका 18 : 13 हम देखते है कि व्यवस्था कि फल पाप कि परिणाम के रूप में दुख और दण्ड है. हम चाहते है कि व्यवस्था और सुसमाचार दोनों का विषय में कहा जाये और दूसरों को शिखाया जाये।

"क्योंकि परमेश्वर के इच्छानुसार जो दुख होता है वह ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है और जिस से पछताना नहीं पड़ता, परन्तु सांसारिक शोक तो मृत्यु उत्पन्न करता है।"

– 2 कुरिन्थियों 7 : 10

लूथरन अधिकार में हम स्पिकार कर कहते है कि "हम विश्वास करते है; शिक्षा देते है, जो लोक यीशु मसीह पर विश्वास करते है तथा परमेश्वर पिता जिनको वास्तविक चुन लिया है वे व्यवस्था कि शाप और दण्ड से मुक्त है। वे व्यवस्था के बिना नहीं है, परन्तु वे पाप और शाप की बल से यीशु मसीह के द्वारा छुटकारा पाया है कि वे व्यवस्था का पालन कर सके वे नया जन्म का अनुभव पाया है; पवित्र आत्मा का दान और सामर्थ पाया है। लेकिन यह शिर्फ आरम्भ ही है। वे व्यवस्था का पालन करना जरूरी है। हमारे जीवन में हम हमेशा परमेश्वरका वचन का सही उपयोग करते है। यद्यपि हमेशा यह करना कोशिश करते है तब भी हम कामीयावी नहीं हो पाते है, परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उनका आत्मा हमेशा हमारे आत्माओं का साथ काम करता है। हमारे प्रभु यीशु मसीह हम से यह प्रतिज्ञा किया है कि जब सत्य आत्मा आएगा तब सब सत्यता में हमारे अठावाई करेगा। हमारे प्रभु हम से जो जो बाते कहाँ है वह सब सत्य आत्मा हमें स्मरण दिलाएगा। हमें समस्त विषय का शिक्षा देगा। हम उस पवित्र आत्मा के साथ

मिलकर कहते और शिक्षा भी देते है। हमारे परमेश्वर को सारे माहमा और आदर जाता है उनका दिव्य वचन के कारण और वह हमें अपनी आत्मा के द्वारा उनका वचन का सही उपयोग, पालन और प्रचार करने के लिए हमारा मदत करता है। सारे महिमा और आदर हमारे परमेश्वर को ही मिले। आमीन।